डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@ gmail.com

विमर्श

रामायण : आधुनिक विमर्श

राजा दशरथ का चरित्र

किसी किताब में ये नहीं लिखा है कि कैसे कोई राजा बनता है। पैसों के मामले में इधर-उधर बोलने से काम चलता है, लेकिन राजा होने के लिये कसरत चाहिये, दूसरों को अपने काबू में लाने की काबिलियत चाहिये। इन्सान को अपनी सुरक्षा की जरूरत है। अगर कोई आदमी मारधाड़ करके अपने पास वाले आदमियों को शान्ति और सुविधा दे सकता है तो वह उन आदमियों में राजा कहलाता है। एक बार राजा बन गये तो पीढ़ियों तक यह राजसीपन चलता है। तरीका एक ही है कि अगर किसी ने राजाज्ञा का उल्लंघन किया तो उसे समुचित दण्ड दिया जाये अथवा देश निकाला दे दिया जाये और इस तरह अपना सिंहासन सुरक्षित रखा जाये।

लोकाचार में राज-काज का यही तरीका सदियों से चला आ रहा है। इतिहास में इसे खोजना कुछ कठिन नहीं हैं। हालांकि राजा बनने के अनेकों उदाहरण हैं, मसलन अनगिनत जंग में मर गये, कुछ ने दूसरों को मार डाला और राजा बन गये। आधुनिक समाज में अब भी जंग कहीं-कहीं जारी है, लेकिन सभ्य समाज में 'वोट' की भी जंग होती है। 'वोट' को मतदान बोलते हैं। वोट के लिये कुछ भी बोल दो, वोट मिल गये तो काम खतम।

लोक संस्कृति में सूरज को सबका राजा कहा जाता था। कोई अगर अच्छा राजा बना तो अपने को सूर्यवंशी कहलाता था। राजा वह अच्छा माना जाता था जो अपनी प्रजा को सम-दृष्टि से देखता था। सबको न्याय देता था। जिसको जो प्राप्य था उसे अस्वीकार नहीं करता था। ऐसी नीति को लोकाचार में राजधर्म कहा गया है। वेद के धर्म से राजधर्म कुछ अलग है। वेद के धर्म में सभी का स्थान समान होता है। राजा प्रजा से मुहब्बत करता है और उसके राज्य की कोई सीमा नहीं होती। उसका किससे बैर-भार नहीं रहता। सभी में घरोबा होता है। वहाँ कोई चोरी नहीं, कोई जुल्म नहीं होता। वाल्मीकि के भाव में यह है रामराज्य। यह आदर्श है। रामजी ने इस आदर्श को अपनाया और फैलाया। उसका विचार आगे होगा। अभी राजा दशरथ के चरित्र को समझा जाये।

मेरे मत में राजा दशरथ का चरित्र बनाकर वाल्मीकि समाज को कुछ शिक्षा देना चाहते हैं। दशरथ के चरित्र पर समाज के घरेलू और आम आदमी की छाप मिलती है। वे

अपने भोग, ऐश्वर्य और ममता आम इंसान की तरह डूबते-उतराते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य अपने निज (स्वार्थ) को सम्भालने में ही बीतता दिखता है। वे पहले कुछ कर डालते हैं फिर बाद में सोचते हैं। उनमें कभी काम और प्रणय का प्रभाव तीव्र होता है। थोड़े धक्के से वे शिक्षा नहीं लेते। जब बड़ा धक्का लगता है तो पश्चाताप में पड़ जाते हैं। और इसके साथ ही निःसंग मौत को गले लगाते हैं। पैसे वाले आम आदमी की शायद कहानी ऐसी नहीं होती है।

दशरथ वैभवपूर्ण अयोध्या राज्य के राजा हैं, उनकी वंश परंपरा है, उनके सभासद् उनके विश्वस्त हैं, कोई उनको 'ना' नहीं करता। सभा में पण्डित भी होते हैं। कभी कुछ तकलीफ हुई तो उनसे सलाह ली जाती है। राजा अपनी मर्जी में चलते हैं। राजा की आज्ञा का पालन करवाकर राजधानी को आगे बढ़ाना पण्डितों का काम होता है। यह भी हो सकता है कि अगर जरूरत ना हो तो राजा पण्डितों को पूछता नहीं,

> जिन्दगी में अन्धेरा आ सकता है, लेकिन नीति ही उसमें चिराग है। नीति मन में रहती है। मन को सब समय स्वार्थ से दूर रखने से नीति मन में जोर से, जम कर बैठती है। और इस तरह आगे बढ़ना आसान होता है। अपने पैरों से बढ़ना ही नीति है।

पण्डित भी राजा को रोकते नहीं। पण्डितों को मालूम है कि उनके स्थान चिरन्तन हैं, राजा मामूली है, आते हैं बढ़ावा करते हैं, मरते हैं।

राजा दशरथ सुख और व्यसन में पले रहते हैं। बना बना के उन्होंने तीन सौ पचास रानियाँ कर ली हैं। उनमें से तीन उनकी पहली दर्जे में आती हैं। पहले कौशल्या से शादी हुई। वह कुछ धर्म प्रवण निकली। दशरथ के आडम्बर और व्यसन में उनकी रुचि नहीं रही। संतान भी नहीं पैदा हुई। फिर सुमित्रा आई। वह ज्ञानी और धीर स्वभाव की निकली। दशरथ का शिकार, वनभोज, सैर सब कुछ अलग था। उनसे भी संतान नहीं हुई। फिर तीसरी कैकेयी से शादी हुई। कैकेयी बड़े खानदान की कन्या थी, उनको घोड़े और तीर में शौक था, तो फिर दशरथ को संग मिल गया। वे उनके साथ विहार करने लगे। कैकेयी दशरथ की काम-दुर्बलता का लाभ उठातीं और इसी का परिणाम हुआ कि राम को उन्होंने वन भेजा और भरत को राजगद्दी दिलवाई। जब दशरथ को यह षड्यन्त्र मालूम हुआ तो देर हो चुकी थी। रामजी वन चले गये। छह दिन बाद दशरथ का देहान्त हुआ।

बचपन में दशरथ को धनुष-बाण चलाने में काफी सफलता मिली, आगे उन्हें शब्दभेदी बाण की कुशलता प्राप्त हुयी। रात को शिकार करने चल पड़े ताकि शब्दभेदी बाण की परीक्षा ले सकें। वर्षा की ऋतु थी। उनमें शिकार करने की भावना प्रबल थी। लोभ से वह अपनी बुद्धि को खो बैठे थे। अन्धेरे में नदी के किनारे छिप गये कि शायद कोई जंगली जानवर शिकार में आ जाय। एक तपस्वी युवक अपने अन्धे माँ-बाप के लिये मटके में पानी भरने आया। पानी की आवाज सुनकर दशरथ को हाथी का भ्रम हुआ। उन्होंने शब्दभेदी बाण चला दिया। युवक क्षत-विक्षत हो, मर गया। अन्धे ऋषि ने दशरथ को श्राप दिया कि उनका भी मरण ऐसे ही पुत्र विरह से होगा। यह घटना दशरथ अपनी मृत्यु के कुछ घण्टों पहले याद करते हैं। अगर उनको पहले याद होता तो शायद वह कैकेयी को कुछ बोल सकते, रामजी वन को नहीं जाते।

गुरू वशिष्ठ रामजी के शिक्षक थे। वाल्मीकि यह नहीं लिखते कि राजा दशरथ के शिक्षक कौन थे। लेकिन यह जरूर है कि राजपुत्र के नाते उनकी शिक्षा रामजी से कुछ कमती नहीं थी। राजा दशरथ ने भी उसी वैदिक धर्म को सीखा जिसे रामजी ने सीखा। लेकिन इन दोनों के आचरण में कुछ फरक रहा। रामजी नीति से चलते हैं वेद का पूरा सम्मान करते हैं। दशरथ अपनी सुविधा से चलते हैं, अपनी इच्छा को सर्वोपरि रखते हैं और स्वयं के बुढ़ापे को एक औजार के तौर पर प्रयोग करते हैं। ममता में इतने अँधे हो जाते हैं कि राजा जनक को युवराज उत्सव में निमंत्रण करना तक भूल जाते हैं। शायद उनकी यह मंशा थी कि भरत की अनुपस्थिति का लाभ उठा कर रामजी को सिंहासन पर बिठाया जाय। यही कारण है कि वे भरत की माँ कैकेयी को सबसे अन्त में, गहरी रात में खबर देने को जाते हैं, उनकी चाल उनके ऊपर उलटी पड़ती है। वे अपनी चाल में खुद ही फँस जाते हैं।

अपनी चाल में खुद फँसना संसारी आदमी की स्वाभाविक रीति होती है। आदमी अपने को सयाना समझता है। उस सयानेपन से अपने विवेक को खो बैठता है। अपनी गलतियाँ ही मौत के समय आदमी को सताती हैं। बुढ़ापे में दशरथ को परलोक का भय आता है। जिन्दगी में हुई भूलें और अपने दिये हुए वचन को याद करके वे चुप रह जाते हैं। यह पूरा रूपक मनुष्य को नीति पर चलने के लिये प्रेरित करता है। आगे-पीछे देख के, सोच के काम करो, यह नहीं कि पहले कुछ कर डालो और बाद में पछताओ। दशरथ बाद में पछताते हैं, लेकिन तब जब देर हो चुकी थी। सर्वनाश के बाद सिर फोड़ने से कोई फायदा नहीं होता।

रामजी का रथ वन को चले जाने के बाद राजा दशरथ अपनी खास रानी कौशल्या के महल में आते हैं। होश में आने पर कौशल्या अपने दुःख की कहानी उनको सुनाती है और रामजी के वनवास के लिये उनको डांटती हैं। दशरथ अपने को वैदिक धर्म का पालन करने वाला समझकर कौशल्याजी को अपने पति को ऐसे बुरा कहने को अनैतिक ठहराते हैं। थोड़ी वैदिक पंक्तियों का सहारा लेकर घर में पति अपना बड़प्पन दिखाता है। लोकाचार की माँ सच्ची होती थी, वैदिक पिता अपने को देखता है। वेद का पिता ब्रह्म है। वह सबको एक जैसा देखता है। किसी ने कुछ गलती की तो उसको दण्ड कभी न कभी अवश्य मिलेगा। कौशल्या को दशरथ रोकते हैं, लेकिन अपने पश्चाताप से खलास हो जाते हैं।

मेरे विचार में राजा दशरथ का चरित्र चित्रण कवि वाल्मीकि की समाज सुधार की शिक्षा का प्रशिक्षण है। आम आदमी का धन-वैभव, सुख-समृद्धि, चाल और स्वार्थ राजापन से जुड़ा हुआ है। लोकाचार में देश या परिवार चलाने के लिये आज भी आदमी ऐसी बारीकियाँ करता हैं। शायद वाल्मीकि दिखाना चाहते हैं कि इस तरीके से कोई फायदा नहीं, नीति के माध्यम से चलना ही ठीक है। कभी भी मत भटको। जिन्दगी में अन्धेरा आ सकता है, लेकिन नीति ही उसमें चिराग है। नीति मन में रहती है। मन को सब समय स्वार्थ से दूर रखने से नीति मन में जोर से, जम कर बैठती है। और इस तरह आगे बढ़ना आसान होता है। अपने पैरों से बढ़ना ही नीति है। ■